सूअरों से भरा एक पेड़

अनिता लोबेल

हिंदी: छाया भदौरिया

"जब आलसी किसान अपनी पत्नी को उस दिन
खेत के काम में मदद करने का वादा करता है
जिस दिन सेब की तरह पेड़ों पर सूअर उगते हैं,
तब वह सोचता है कि वह सुरक्षित है लेकिन
उसकी पत्नी हर बार उसे मात दे देती है —
और अनीता लोबेल ने ख़ुश, सेब चबाते,
रस्सी से बँधे सूअरों के पेड़ों को एक
मूर्खतापूर्ण दृश्य बनाया है।"

-किर्कस, तारांकित समीक्षा

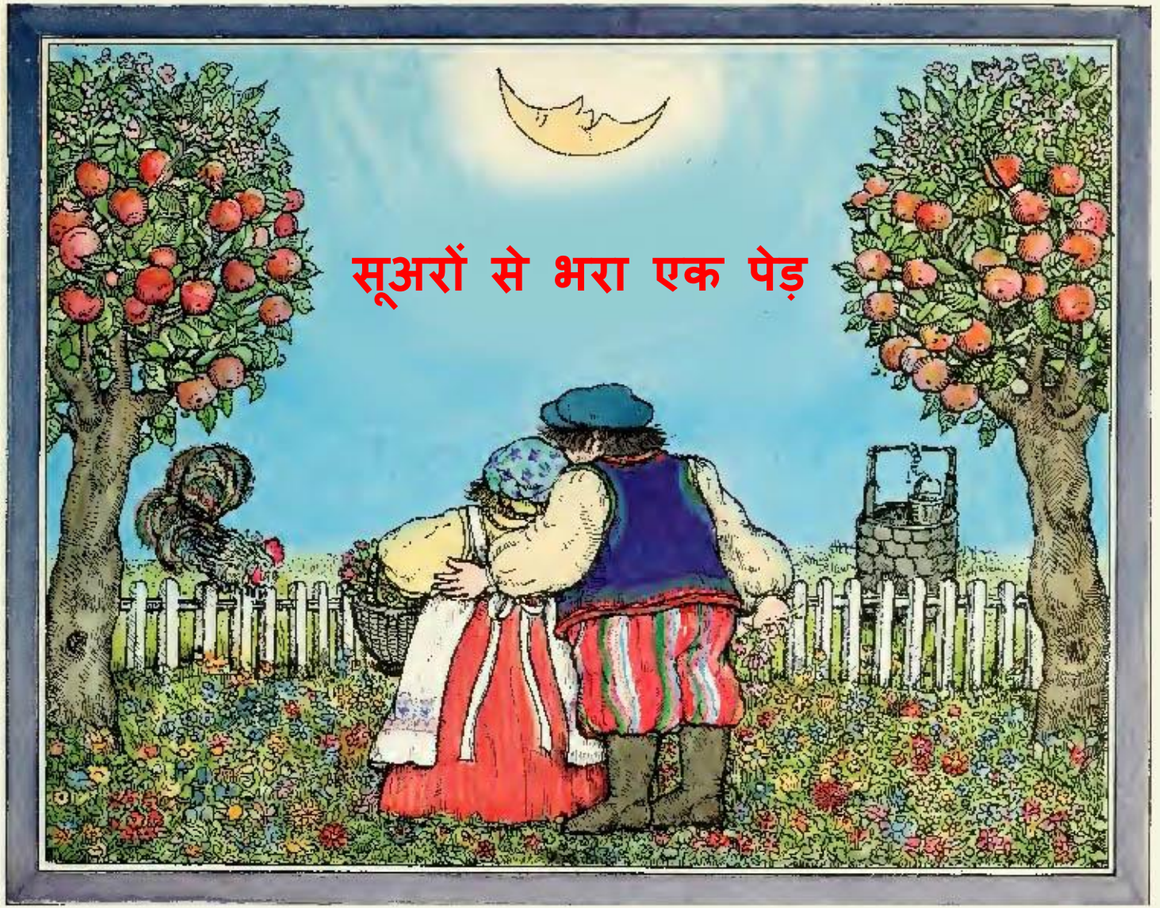

सूअरों से भरा एक पेड़

अनिता लोबेल

हिंदी: छाया भदौरिया

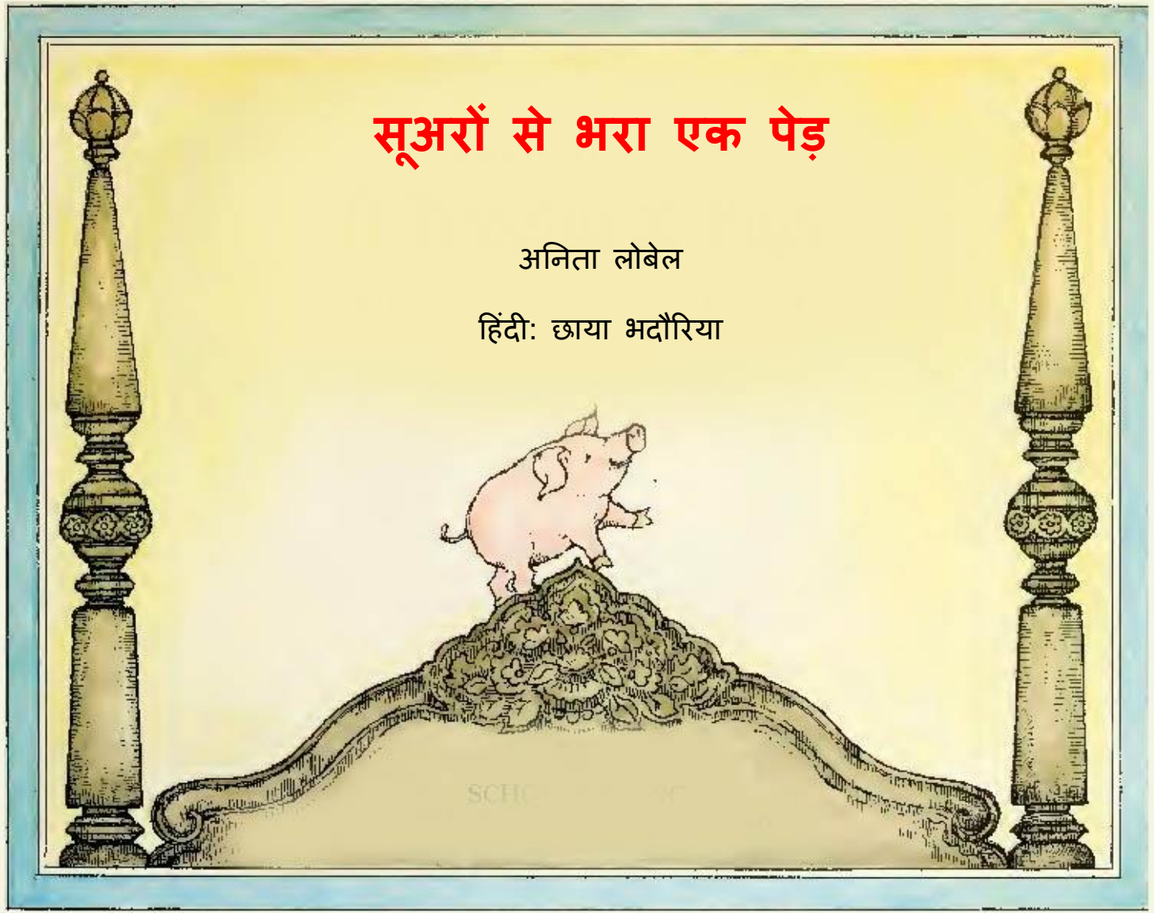

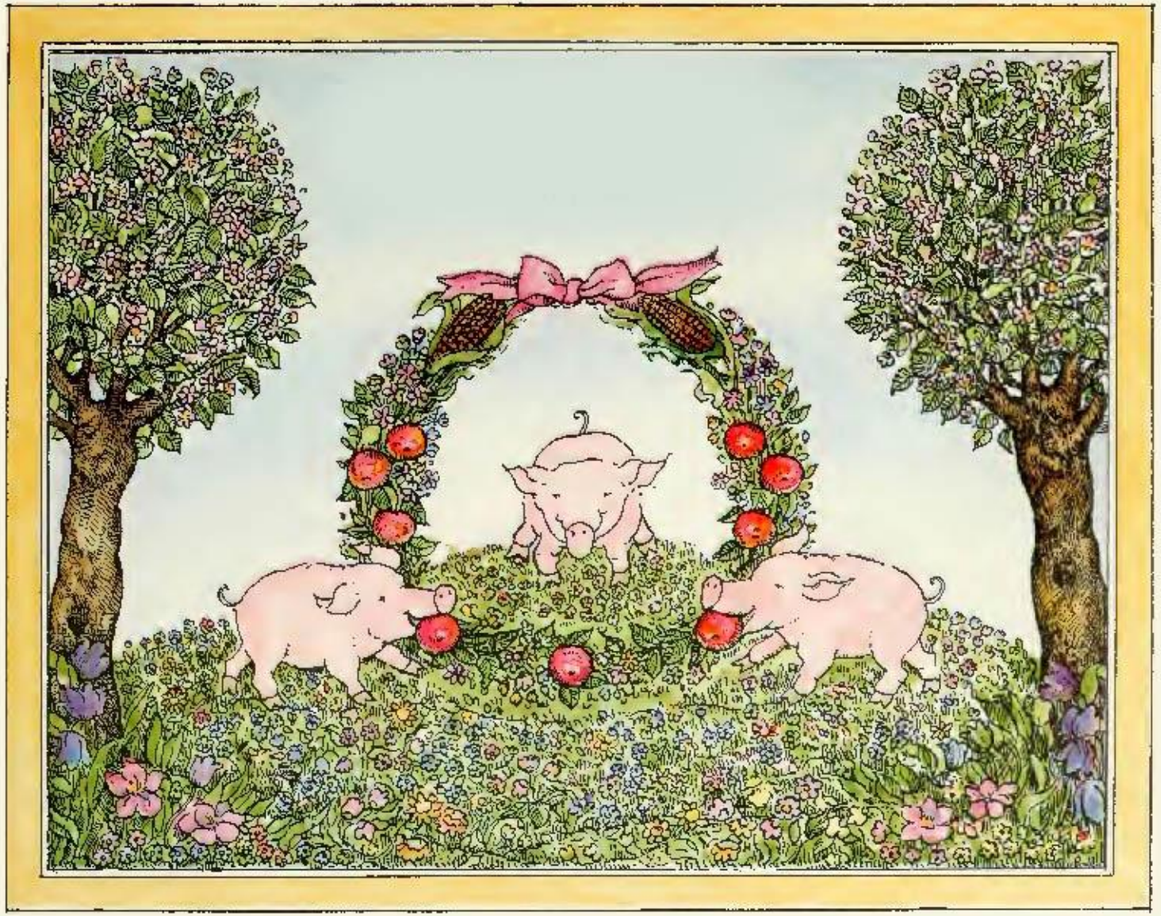

एक दिन एक किसान और उसकी पत्नी बाजार गए।
उन्होंने कुछ सूअर देखे जो बिक्री के लिए थे।
"इतने अच्छे गोल सूअर," किसान ने कहा, "हमें
उन्हें अवश्य खरीदना चाहिए।"
"इन सूअरों को पालना कितना कठिन काम होगा,"
किसान की पत्नी ने कहा।
"कुछ कठिन नहीं होगा। हम मिलकर साथ में करेंगे,"
किसान ने कहा।
किसान और उसकी पत्नी ने सूअर खरीदे और
उन्हें अपने खेत में घर ले आए।

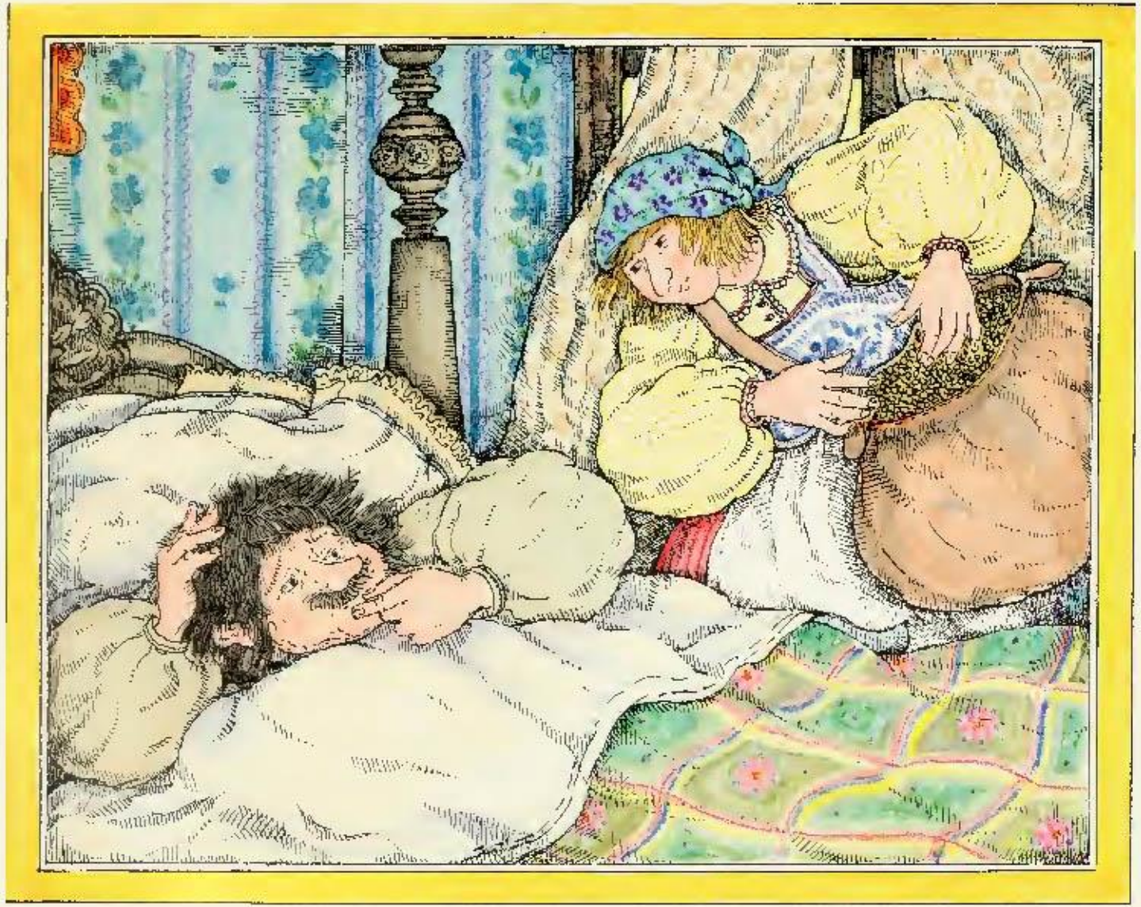

अगले दिन किसान की पत्नी किसान के पास आई और कहा, "अजी सुनते हो, तुम्हें मकई बोने में मेरी मदद करनी चाहिए ताकि हमारे सूअरों को खाने के लिए कुछ मिल सके।"

लेकिन किसान तो ठहरा बहुत आलसी आदमी। वह अपना अधिकांश समय बिस्तर पर, तकिए पर सिर रखकर, सोकर बिताना पसंद करता था।

किसान ने कहा, "अगर तुम आज मक्का लगाओगी तो मैं अगली बार तुम्हारी मदद करूँगा।"

लेकिन कब?" किसान की पत्नी ने पूछा।

जिस दिन बगीचे में सूअर फूल की तरह खिलेंगे।

उस दिन मैं तुम्हारी मदद करूँगा।

जाओ मक्का बोओ," किसान ने कहा

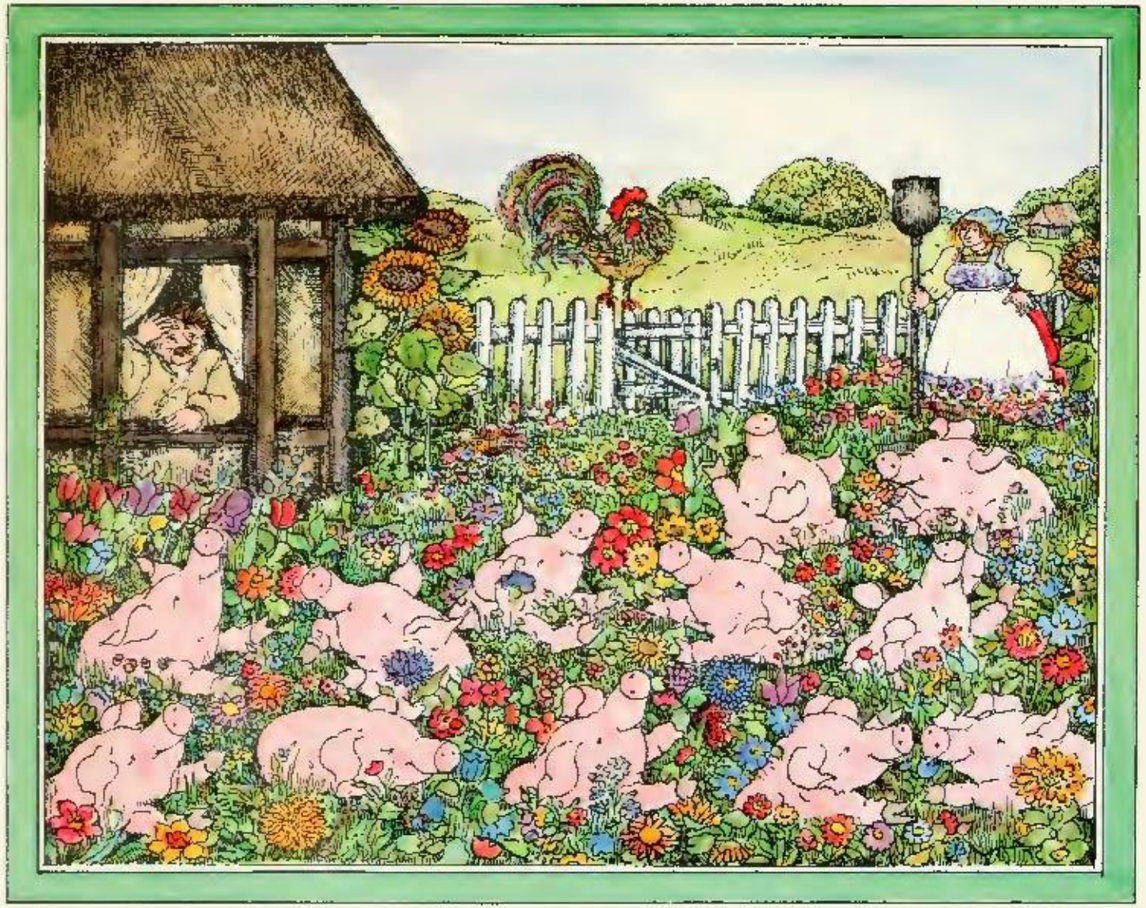

सुबह जब किसान उठा, उसने खिड़की से बाहर झाँका।
उसने देखा कि बगीचे में सूअर फूल की तरह खिल रहे थे।
लेकिन उसने अपना सिर वापस तकिये पर रख लिया
और सो गया।
“मेरा पति कितना आलसी है!" किसान की पत्नी ने कहा,
और उसने खुद ही मकई बो दी।

इसके तुरंत बाद, किसान की पत्नी किसान के पास आई
और बोली, "अजी सुनते हो, तुम्हें सूअरों के लिए एक
गड्ढा खोदने और उसे मिट्टी से भरने में मेरी मदद करनी
चाहिए ताकि हमारे सूअरों को बैठने के लिए एक ठंडी
जगह मिल सके।"
किसान ने कहा, "अगर तुम आज गड्ढा खोदोगी,
तो मैं अगली बार तुम्हारी मदद करूँगा।"
"लेकिन कब?" किसान की पत्नी ने पूछा।
"जिस दिन सूअर पेड़ों पर सेब की तरह उगेंगे," किसान ने कहा,
"उस दिन मैं तुम्हारी गड्ढा खोदने में मदद करूँगा।"

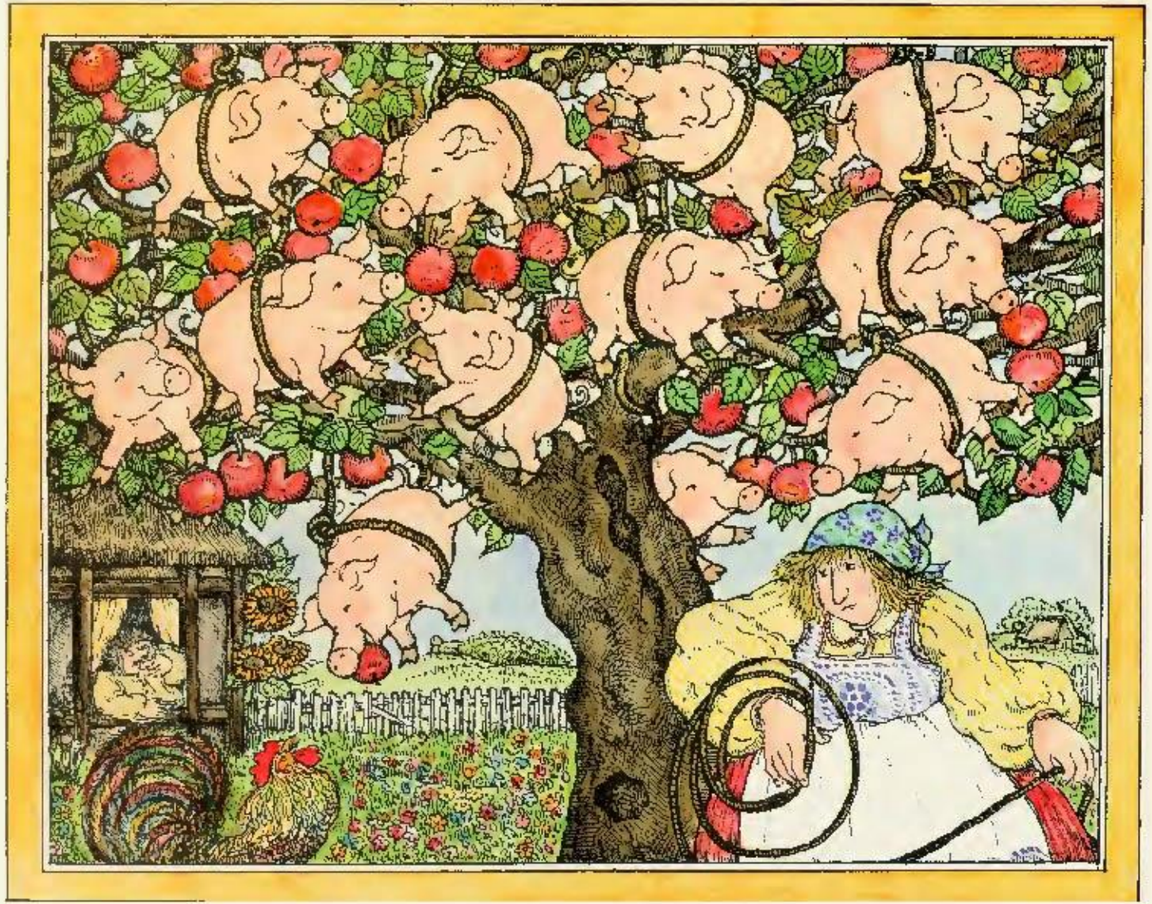

सुबह जब किसान उठा, उसने खिड़की से बाहर झाँका।

उसने देखा कि सूअर पेड़ों पर सेब की तरह उग रहे थे।

लेकिन उसने अपना सिर वापस तकिये पर रख लिया और सो गया।

"कितना आलसी, बहुत आलसी पति है मेरा,"
कहते हुए उसने गड्ढा खोदा और उसे मिट्टी से भर दिया।
धीरे-धीरे किसान की पत्नी किसान के पास आई और
कहा, " अजी सुनते हो, तुम्हें कुएँ से पानी की बाल्टियाँ
निकालने में मेरी मदद करनी चाहिए ताकि हमारे
सूअरों को ताजा पानी मिल सके।"
किसान ने कहा, "अगर तुम आज कुएँ से बाल्टियाँ निकाल लोगी
तो मैं अगली बार तुम्हारी मदद करूँगा।"
"लेकिन कब?" किसान की पत्नी ने पूछा।
"जिस दिन सूअर आसमान से बारिश की तरह
गिरने लगेंगे। उस दिन मैं पानी की बाल्टियाँ उठाने में
तुम्हारी मदद करूँगा," किसान ने कहा।

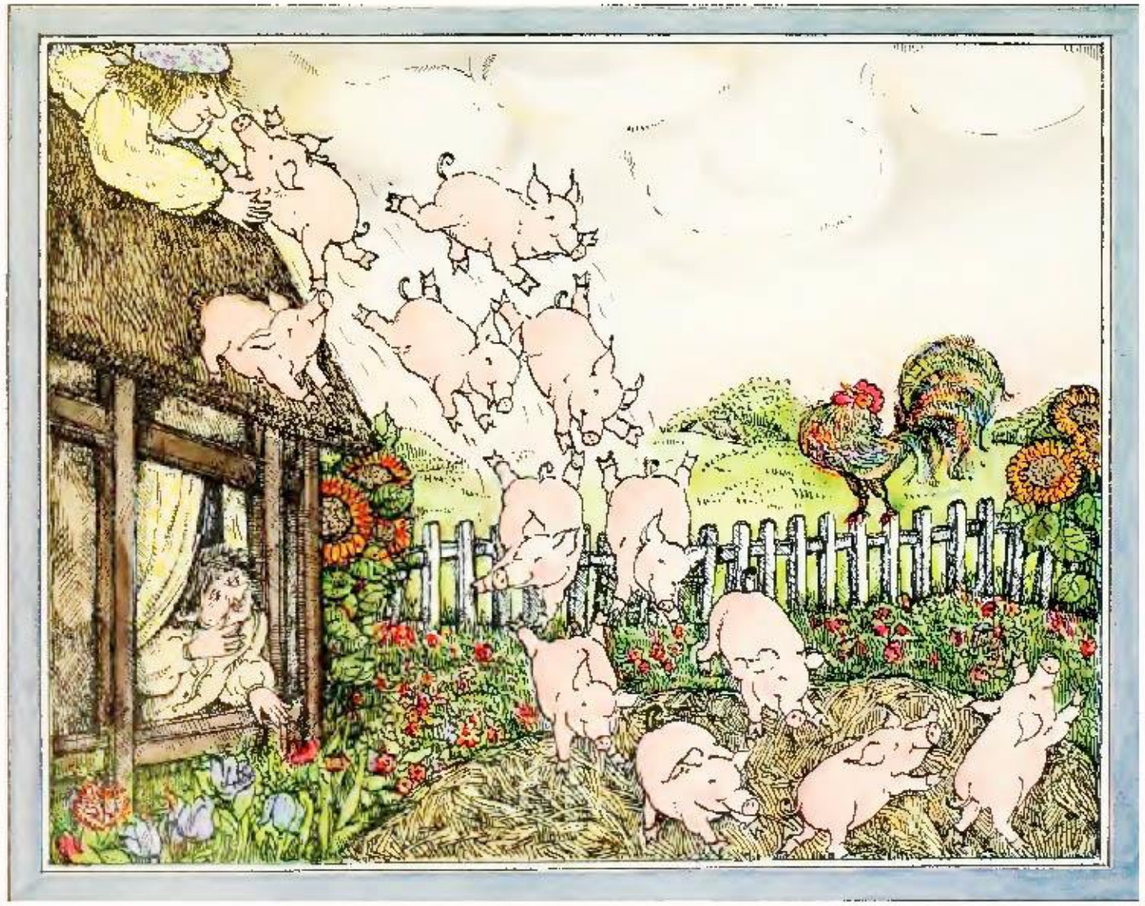

सुबह जब किसान उठा तो उसने खिड़की से बाहर झाँका। उसने देखा कि सूअर आसमान से बारिश की तरह गिर रहे थे। लेकिन उसने अपना सिर वापस तकिये पर रख लिया और सो गया।

मेर पति कितना आलसी, आलसी, महाआलसी है,”
किसान की पत्नी ने कहा, और वह खुद कुएँ से पानी से
भरी बाल्टी लेकर आई।
जब मक्का पक गई तो किसान की पत्नी किसान के पास आई
और बोली, “अजी सुनते हो, तुम्हें मक्के की कटाई में मेरी
मदद करनी चाहिए ताकि हमारे सूअरों को बढ़िया खाना मिल सके।"
लेकिन किसान ने जम्हाई लेते हुए कहा, "काश वह दिन आता
जब वे सूअर वसंत ऋतु में बर्फ की तरह गायब हो जाते।
उस दिन मैं सच में अच्छी तरह से आराम कर सकूँगा।"

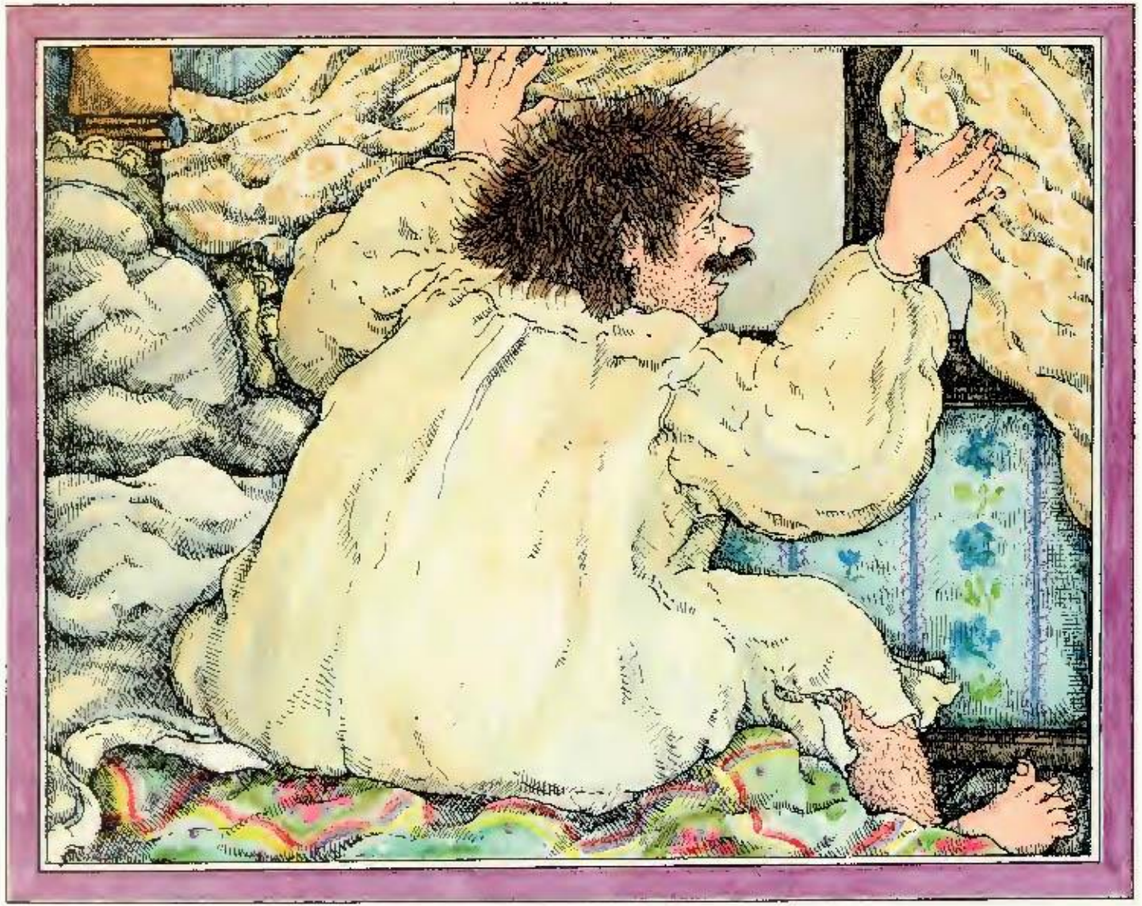

सुबह जब किसान उठा तो उसने खिड़की से बाहर देखा।
उसे सूअर कहीं भी नज़र नहीं आए। वे बगीचे में फूलों
की तरह नहीं खिल रहे थे। वे सेब की तरह पेड़ों पर
नहीं उग रहे थे। वे बारिश की तरह आसमान से नहीं
गिर रहे थे। वे वसंत ऋतु में बर्फ की तरह गायब हो गए थे।
"ये मैंने क्या किया?" किसान चिल्लाया
"हमारे प्यारे सूअरों को क्या हो गया?"

किसान ने अपनी पत्नी को अपने बिस्तर के पास बुलाया।
"अरे भाग्यवान," किसान ने कहा, "तुम्हें हमारे खोए हुए
सूअरों को ढूँढने में मेरी मदद करनी चाहिए।"
किसान की पत्नी ने कहा, "अगर आप आज उन्हें ढूँढ़ेंगे
तो मैं अगली बार आपकी मदद करूँगी।"
"लेकिन कब?" किसान से पूछा
किसान की पत्नी ने कहा, "जिस दिन आप
बिस्तर से उठ जाएँगे, अपने कपड़े पहनेंगे
और फिर कभी आलसी न होने का वादा करेंगे।"
"उस दिन मैं हमारे खोए हुए सूअरों को ढूँढने में
आपकी मदद करूँगी।"

किसान तुरंत बिस्तर से कूद गया। उसने
अपनी शर्ट, पैंट और जूते पहन लिए।
वह अपने घुटनों पर गिर गया और रोया,
मैं कभी-भी, कभी-भी आलसी नहीं बनूँगा।
किसान की पत्नी ने कहा, "बहुत अच्छा।"

किसान की पत्नी बाहर की तरफ़ भागी और
तहखाने का दरवाज़ा खोला। सभी सूअर
धूप में उछलते हुए बाहर आ गए।

किसान ने मक्के की कटाई में अपनी पत्नी की मदद की।
फिर खाना पकाने में उसकी मदद की।
फिर किसान, किसान की पत्नी और सूअर मकई के
हलवे और गर्म मकई के मफिन के स्वादिष्ट रात्रिभोज
के लिए बैठ गए।

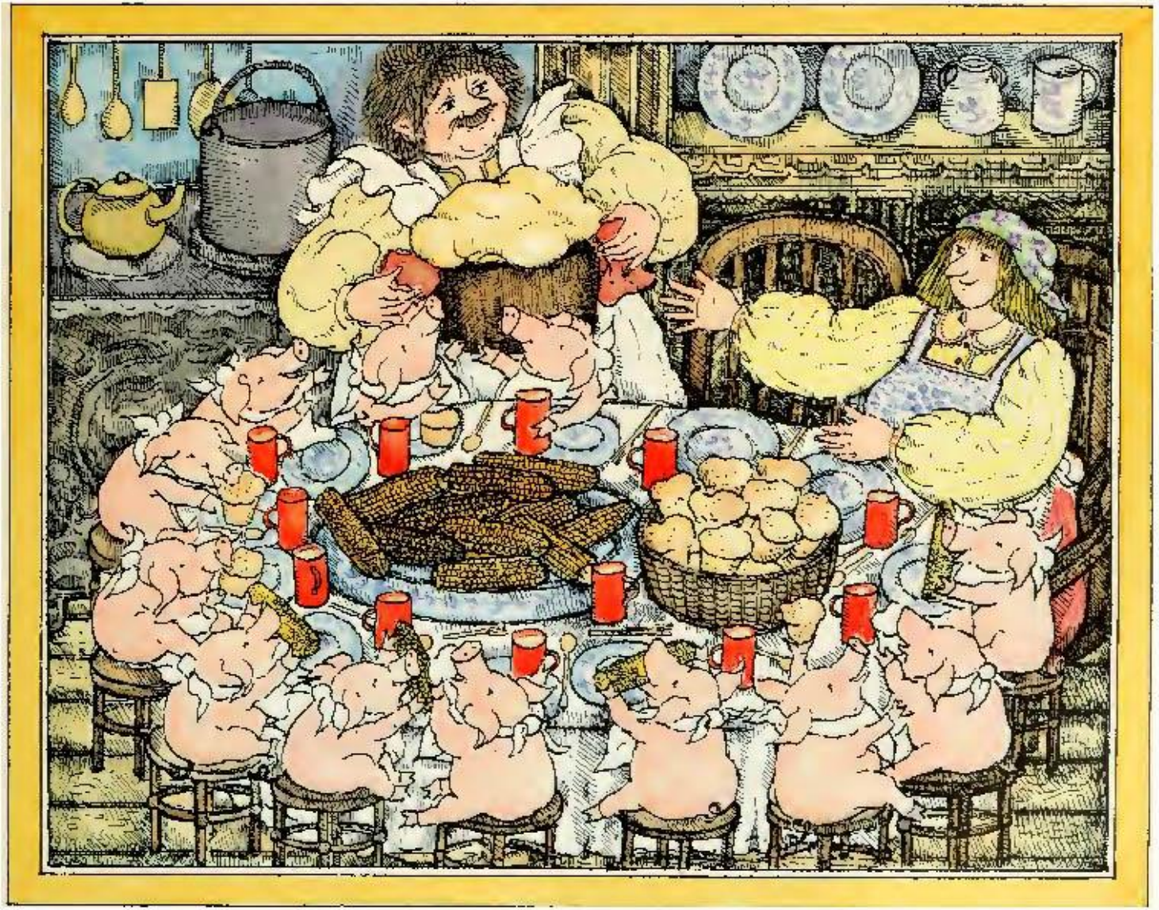

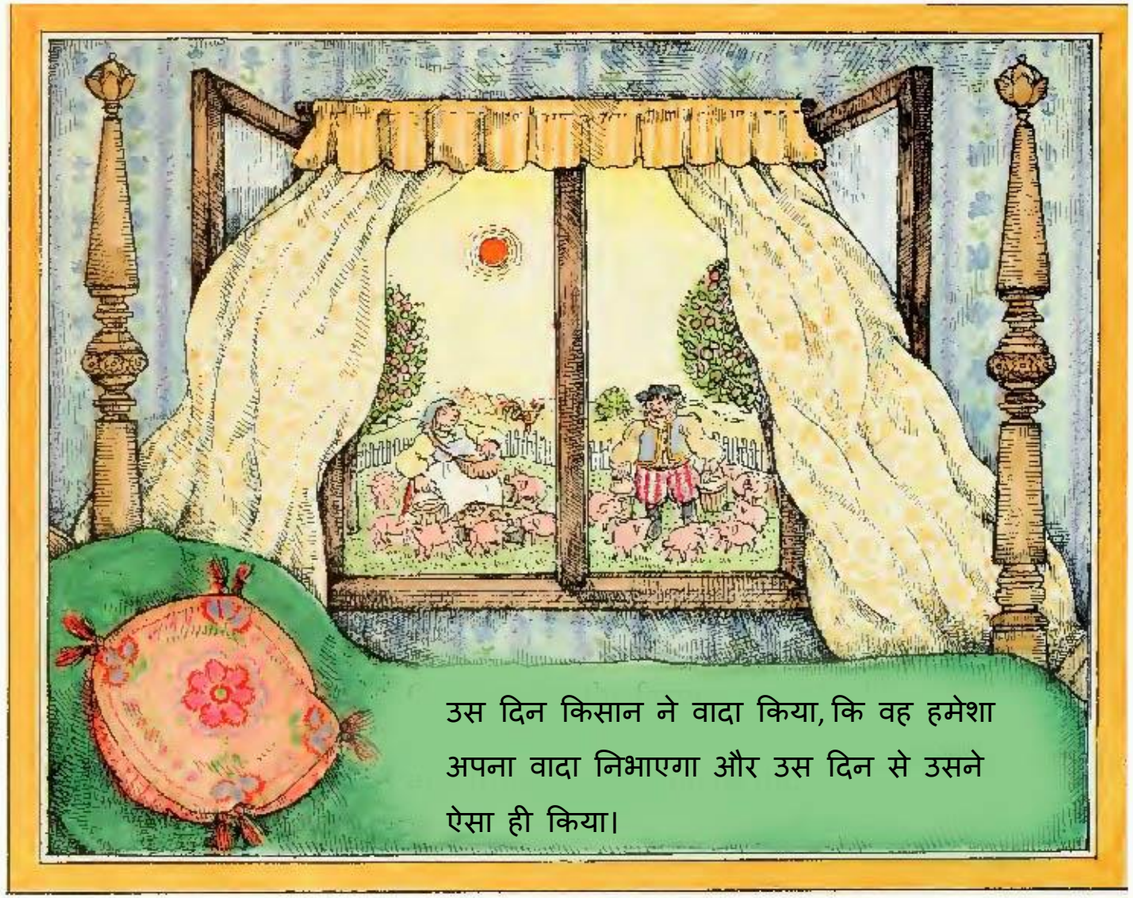

उस दिन किसान ने वादा किया, कि वह हमेशा
अपना वादा निभाएगा और उस दिन से उसने
ऐसा ही किया।